REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

# स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कविता के प्रतिमान तथा विवेकानंद दर्शन

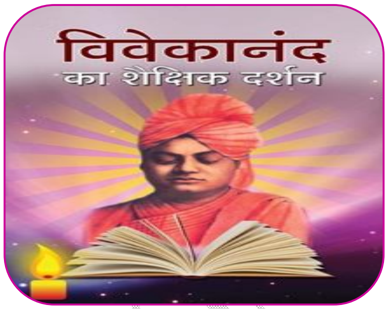


डॉ. सुधीर शर्मा [1] , सनीश चन्द्र[2]
[1]शोध निर्देशक , विभागाध्यक्ष हिन्दी कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई (छ.ग)
[2]शोध छात्र , हिन्दी , कल्याण कॉलेज भिलाई / पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर .

## प्रस्तावना :

दर्शन कविता की उच्चावस्था है । (1) कविता एवं दर्शन संगी बन जाते हैं । (2) - इन विचारों के माध्यम से युगनयक स्वामी विवेकानंद ने कविता की सरसता तथा दर्शन की सुगमता के मध्य संबंध सेतु स्थापित किया था । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कविता को हृदय की युक्ति की साधना के लिए शब्द विधान कहा है । (3) वे आगे कविता को भावयोग कहते हैं तथा इसे कर्मयोग एवं ज्ञानयोग के समकक्ष मानते हैं । ये कर्मयोग एवं ज्ञानयोग विवेकानंद के दर्शन के आधारभूत अवयव हैं हालाँकि इसमें अध्यात्म के तत्वों की अधिकता है किन्तु सरोकार में ये मनुष्य की चिंता एवं व्यावहारिकता को प्रतिलक्षित करते हैं । स्वामी विवेकानंद स्वंय एक कवि भी रहे तथा उनकी कविताओं से गुजरते हुए चेतना, गांभीर्य , सौन्दर्य , संस्कृति , देश , आस्था, मूल्य आदि कई काव्य प्रतिमानों का आस्वादन होता है । कुछ समान प्रकार के विचार तत्व आधुनिक हिन्दी कविता में भी हैं । तात्पर्य यह कि विवेकानंद का दर्शन प्राय: कविता की वृहतर भूमि तथा उसके प्रतिमानों को छूती हुई गुजरती है । चूँकि विवेकानंद का दर्शन समाधान का दर्शन है अत: यह रोचक हो जाता है कि आधुनिक कविता में चिन्हित समस्याओं को एक मनीषी एवं मर्मज्ञ की दृष्टि से देखा जाये ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने साहित्य शीर्षक निबंध में कहा है कि साहित्य विचार का बोधक है ना कि पदार्थ का । (4) वे समयसापेक्ष, साहित्य में परिवर्तन को इसकी उत्तरजीविता के लिए आवश्यक मानते हैं । इस तर्ज पर हिन्दी कविता में भी स्वाधीनता के बाद व्यापक बदलाव देखे जाते हैं । आधुनिक कविता ने ना केवल विरोधाभासों को स्वर दिया है बल्कि इसने समाज , निजता , अभिव्यक्ति , साम्य-वैषम्य , धर्म , परंपरा आदि के नवमूल्यांकन हेतु नए दृष्टि-द्वार भी खोले । स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कविता आंतरिक उद्वेलन तथा बाह्य-जड़ता पर निरंतर प्रहार के तदात्मय को लेकर चलती है । आलोचक विश्वनाथ तिवारी ने आधुनिक भारतीय कविता संकलन की भूमिका में लिखते हैं - हिन्दी में स्वाधीनता के बाद पाँच पीढ़ियों के कवि काव्य रचना में प्रवृत दिखाई पड़ेंगे । जिसे छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और बाद के दशकों की नई कविता कहा जाता है उन सबके कवि इनमें शामिल हैं । उनमें केवल उम्र का अंतर नहीं है बल्कि उनके अनुभव स्तरों, विचारों और विचार दर्शनों में भी काफी फर्क है । साथ हीं उनके सर्जन और अभिव्यक्ति कौशल में भी । (5) स्वाधीनता के बाद की कविताओं में अर्थ और कला दोनों स्तरों पर व्यापक बदलाव आए हैं । ये जीव और जगत आस्था और दिलचस्पी रखने वाली कवितायें हैं । श्री तिवारी आगे लिखते हैं - वस्तुत: स्वाधीनता के बाद की हिन्दी कविता को एक प्रतिपक्षधर्मी कविता के रूप में भी स्मरण किया जाएगा । सांकेतिकता, एन्द्रिकता, आत्मिकता और सहजता लिए हुए .. (इन कविताओं में).. अपने आस पास की हीं नहीं बल्कि सारी दुनिया में हो रहे परिवर्तनों की आहटें सुनाई पड़ती है । (6)

## आधुनिक भारतीय कविता के विविध स्वर एवं विवेकानंद दर्शन का औदात्य :-

जीव एवं सर्जक का एकात्म स्वरूप वेदान्त दर्शन का आधार है । इसमें कर्ता हीं साधक होता है ।

और वह मेरा नाच है जिसे सब देखते हैं
मुझे नहीं
रस्सी को नहीं
खंभें को नहीं
रोशनी नहीं
तनाव नहीं - नाच
(नाच / अज्ञेय )

अज्ञेय की उपरोक्त कविता में जिस एकात्म की चर्चा की गई है उसका स्पष्टीकरण हमें विवेकानंद दर्शन में प्राय: मिलता है । नर और नारायण का एकात्म उनके दर्शन का आधार तत्व है –

आह, मुझे इस रूप में मिले नारायण
मेरे हीं बाणों से विंध ।
(ना जाने केही भेस /अज्ञेय)

स्वतंत्र्योतर कविता में यह दर्शन अन्य स्थानों पर भी द्रष्टव्य है :-

तुम नहीं हो , मैं अकेला हूँ मगर
यह तुम्हीं हो जो
टूटती तलवार की झंकार में
या भीड़ की जयजयकार में
या मौत के सुनसान हाहाकार में
फिर गूंज जाती हो ।
(क्योंकि/धर्मवीर भारती )

या

प्रतिक्रिया हीं मेरे अस्तित्व का मूल है
सृष्टि से जुड़कर हीं मेरी सार्थकता है
निरर्थकता उसकी बेचैनी है तो मेरी भी
प्रतिक्रिया उसकी आत्मा है
प्रतिक्रिया मेरा शरीर ।

(छाया पुरुष /हरिनारायण व्यास)



LBP PUBLICATION

**सार्थकता की खोज :-**

युगनायक विवेकानंद के दर्शन में जीवन की सिद्धि पर विशेष ज़ोर हैं जिसका अभिप्रेत समय का सदुपयोग तथा कर्म की प्रधानता है। वे मानते थे की जीवन को मूल्यवान बनाना व्यक्ति का संकल्प होना चाहिए। आजादी के पूर्व के पराधीन समाज में मानवीय जीवन का मोल नहीं रह गया था। उदाहरण के लिए 1943 के बंगाल अकाल को लेते हैं जहां लाखों भारतीयों की मौत हो गई थी किन्तु सरकार ने कोई ठोस उपाय नहीं किए। आजादी के बाद भारतीय चेतना का विस्तार हुआ। अब भारतीयता अपनी कर्मठता को सक्रिय और जीवन को अनुभवोपयोगी बनाना चाहती थी।

नदी में धँसे बिना
पूल का अर्थ भी समझ नहीं आता
कुछ भी नहीं होता पार
नदी में धँसें बिना
ना पूल पार होता है
ना नदी पार होती है
(पार /नरेश सक्सेना)

आधुनिक कविता में मनुष्य अपने होने की सुगंध पाना चाहता है :-

कैसा मैं मनुष्य हूँ
कि कहीं छोड़ नहीं पाता अपनी छाप
अपने मानुष होने की सुगंध
कहीं छोड़ नहीं पाता
(छाप/एकांत श्रीवास्तव)
याकि

यह सोचते हुए कि मदद पाने की
कितनी कम तकनीकें बाकी रह गई हैं
उसने शरीर में अंगूठे को ढूंढा
(अँगूठा/कुमार अंबुज)

कवि आज की समस्याओं के समाधान के रूप में अपने जीवन की सार्थकता देखता है। वह अपने जीवन को पुकारना चाहता है –

प्रकाश से वंचित अधिकतर इलाकों में
कहता हूँ मैं साथ वालों को रचने के लिए
अपने पूरे मनुष्य की प्राणयुक्त काया कि सब सुनाई पड़े
पुकारता हूँ मैं जीवन को जीवन की ओर



LBP PUBLICATION

(पुकार/ पंकज सिंह)

वह हाथ बढ़ाना चाहता है जिससे कि
सबके लिए राहों पर चलना सुलभ हो सके । -
मेरा हाथ पकड़ कर वह खड़ा हुआ
मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
(हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था/बिनोद कुमार शुक्ल)

**समय की चिंता : -**

राष्ट्र का नवनिर्माण, समृद्धि एवं उन्नति विवेकानंद दर्शन के मूल तत्व हैं । वे लिखते हैं - राष्ट्र बचा रहेगा तो तुम्हारे और हमारे जैसे हजारों आदमियों के भूखों मरने से से भी क्या हानि होगी ? यह राष्ट्र डूब रहा है । (7) समय की चिंता एवं परिस्थितियों की विकटता का स्वर आधुनिक भारतीय कविता में भी तंज़ बनकर उभरा है –

आसमान की बदलती रंगत को खतरों से सावधान होने का समय है
समय है एक साथ बोलने और सोचने का
पृथ्वी को एकजुट होकर बचाने का समय है
समाज में भयावहता का दृश्य देखिये -
सत्य स्वंय घायल हुआ, गई अहिंसा चूक
जहां तहां दागने लगी शासन की बंदूक
(शासन की बंदूक/नागार्जुन)

तथा

हो चुके हैं सभी प्रश्नों के उत्तर पुराने
खोखले हैं व्यक्ति और समूह वाले
(नया कवि/गिरिजा प्रसाद माथुर)

आधुनिक भारतीय कविता हमें स्वतन्त्रता के पश्चात आने वाली समस्याओं के प्रति आगाह करती है :-

ऊँची हुई मशाल हमारी आगे कठिन डगर है
शोषण से मृत है समाज , कमजोर हमारा घर है
शत्रु हट गया लेकिन उसकी छायाओं का डर है
पहरूओं सावधान रहना
(पंद्रह अगस्त /गिरिजा प्रसाद माथुर)

स्वतंत्रयोतर समाज में व्याप्त दिशाहीनता की ओर आगाह कर्ता हुए कवि कहता है –



LBP PUBLICATION

कौन सा पथ है ?
मार्ग में आकुल-अधिरातुर बटोही ने यों पुकारा
कौन-सा पथ है
(पथहीन /भारत भूषण अग्रवाल)

इस समय में सामाजिक विषमता का दृष्ट भी स्पष्ट दिखने लगा है –

राष्ट्रगीत में भला कौन वह
भारत-भाग्य-विधाता है
फटा सुथन्ना पहले जिसका
गुण हरचरना गाता है
(अधिनायक /रघुवीर सहाय)

यह व्यवस्था से बदलाव की लड़ाई का भी समय है । यह ऐसा समय है जहाँ मूल प्रश्न छिपा रहता है और गौण विषयों में आमजन को उलझाया रखा जाता है :-

मुझे लड़ना नहीं अब
किसी छोटे कद वाले आदमी के इशारे पर
जो अपना कद लंबा करने के लिए
पूरे देश को युद्ध में झोंक देता है ।
(एक छोटी सी लड़ाई /कुमार विमल )

यह ऐसा दौर है जहाँ सामाजिक विसंगतियों में लाचारी का प्रकोप फैला है जो कुंठा देती हैं तथा जनमानस केवल स्वतन्त्रता के प्रतिमानों में उलझ कर रह गया है :-

बर्फ के टुकड़ों की भांति बंद हो गया हूँ मैं
स्वतन्त्रता के थर्मस में
शून्य के बीचों-बीच रक्षित है
मेरे जीवित रहने का अधिकार लाचार ।
(श्री मुकुट सक्सेना /कादंबनी मई 1969)

अगर इस विवशता में कोई समाधान ढूँढना चाहे तो विवेकानंद का दर्शन बिलकुल सटीक उत्तर बनकर प्रस्तुत होता है । वे कहते हैं कि व्यक्ति को अपनी दुर्बलताओं का सामना कर , मन:स्थिति को नियंत्रित कर स्वंय से विजय की ओर बढ़ना चाहिए । वे कहते हैं कि राह पर चलने का निश्चय करने वाले को साथ जरूर मिलता है भले हीं वह अदृश्य शक्ति का हीं हो :-

वह जो तुममें है और तुमसे परे भी
जो सबके हाथों में बैठ कर काम करता है

उसकी आराधना करो और अन्य प्रतिमाओं को तोड़ दो । (08 )
(जागृत देवता /कविता / स्वामी विवेकानंद)

और यह भी सचेत करते हैं कि :-
देखो जो बलात आती है
वह शक्ति , शक्ति नहीं है (शांति /स्वामी विवेकानंद)
और आगाह भी कि
जो जानने का साहस करता है
दु ख भोगता है
(मेरा खेल खत्म हु आ /कविता/ स्वामी विवेकानंद)

विवेकानंद कहते हैं कि - मैं तुमसे पहले हीं कह चुका हूँ कि मुझे दृढ़ विश्वास है कि स्वंय भारतीयों द्वारा हीं भारत की उन्नति होगी । (09) समान प्रकार से स्वंय या निजता का आश्रय आधुनिक हिन्दी कवियों का भी प्रमुख स्वर रहा है :-

सारी ज़िंदगी
मैं सिर छुपाने की जगह ढूँढता रहा
और अंत में
अपनी हथेलियों से
बेहतर जगह दूसरी नहीं मिली ।
(आश्रय /सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)

वह समझता है कि मनुष्य को हीं सभ्यता की चिंता करनी होगी :-

दीपांकर का घुटा हु आ सिर देखो
देखो जो पृथ्वी की तरह गोल है
यह मनुष्य द्वारा पृथ्वी को धारण करने का महादृश्य है ।
(प्रार्थना के शिल्प में नहीं /देवी प्रसाद मिश्र)

आधुनिक कविता में निर्भीक होने और सामना करने का दर्शन है :-

ठोकर पत्थर नहीं खाते
या तो आदमी खाते हैं या नदियाँ खाती हैं
जो भी ठोकर खाते हैं प्रवाह पा जाते हैं

वह चुनौतियों से नहीं घबराता :-

बुरे वक्त की रात में भी
जीता हूँ
सूरज की तरह

LBP PUBLICATION

सामना करने से
भागकर
डूब नहीं जाता
(बुरे वक़्त की राह में /मलय)

आधुनिक कविता में दुर्गम परिस्थितियों में ईश्वर के संबल का भी आह्वान है :-

परमगुरु दो तो ऐसी विनम्रता दो
उन लोगों का माथा सहला सकूँ
और इसका डर ना लगे कि हाथ हीं काट खाएगा।
(प्रार्थना के शिल्प में /गिरिजा प्रसाद माथुर )

और इस प्रयास में उसे आशा का संबल प्राप्त है :-

पर होता है इसका ठीक उल्टा
कोई-न-कोई , कहीं - ना -कहीं , कभी -ना -कभी
ऐसा मिल जाता
जिससे प्यार किए बिना रह हीं नहीं पाता।।
(क्रूरता /कुमार अंबुज )

या कि

दूर तक फैली हुई है ज़िंदगी की राह
ये नहीं तो कोई और वृक्ष देगा छांह
वह जानता है कि
मिट्टी में हवा में पानी में
पालक में और खून में जो लोहा है
यही सारा लोहा काम आता है एक दिन
फूल जैसी धरती को बचाने में
(लोहा /एकांत श्रीवास्तव)

## धर्म और प्रपंच

अपने धर्म-महासभा के व्याख्यान में स्वामी विवेकानंद ने एक महत्वपूर्ण बात कही थी जो धर्म के प्रति उनके सहिष्णु व्यवहार का परिचायक है :- मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व करता हूँ जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति दोनों की हीं शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में हीं विश्वास नहीं करते बल्कि समस्त धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं।

LBP PUBLICATION

आधुनिक समाज में जबकि धर्म के नाम पर प्रपंच बढ़ रहा है, कविताओं में इसका आक्रोश साफ दिखता है। वह धर्म को करुणा का आश्रय मानता है क्रूरता का नहीं: -

तब आएगी क्रूरता
पहले ह्रदय में आएगी और चेहरे पर ना दिखेगी
फिर घटित होगा धर्म ग्रन्थों की व्याख्या में
फिर वह जनता का आदर्श हो जाएगी
(क्रूरता/ कुमार अंबुज)

अब प्रतीकों की लड़ाई शुरू है
जिससे सबको बचना होगा
मुझे लड़ना नहीं अब
किसी प्रतीक के लिए
किसी नाम के लिए
(एक छोटी-सी लड़ाई /कुमार विमल)

इस समस्या का समाधान भी कवि दृष्टिगत कर पाता है। यह समाधान विवेकानंद दर्शन का औदात्य छू लेता है :

तेज़ी से एक दर्द मन मे जगा
मैंने पी लिया
छोटी सी एक खुशी
अधरों में आई
मैंने उसे फैला दिया
मुझको संतोष हुआ और लगा
छोटे को बड़ा करना धर्म है।
(प्रार्थना के शिल्प में /माथुर)

**स्त्री चेतना :**

स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में स्त्री चेतना के स्वर प्रमुखता से परिलक्षित हुए हैं। इनमें चेतना है, चुनौती है तथा अतीत को प्रश्न करने का साहस भी -

छोटी जोत की खेती से कैसे गुजारा होता था पुरखों का
क्या स्त्रियाँ और बेटियों को मिल पाता था भरपेट खाना
(पुरखों का दुख / मदन कश्यप)

वह स्त्री होने का दर्द समझता है
सींकने
सींझने, पकने के बीच
झेलना का हुनर



LBP PUBLICATION

सहस्त्रशताब्दियों का इतिहास

(स्त्री का दु ख/कात्यायनी)

या कि

और वह खुद को हीं गूँथती हुई बार बार

खुश है की रोटी बेलती है जैसे पृथ्वी

(स्त्री /अनामिका)

स्वाधीनता के लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले ,समान प्रकार की चिंता विवेकानंद साहित्य में भी मिलती है - इस देश में स्त्री और पुरुषों मेँ इतना अंतर क्यूँ समझा जाता है, यह समझना कठिन है । ... नियमों में आबद्ध करके इस देश के पुरुषों ने स्त्रियों को एकदम बच्चा पैदा करने की मशीन बना डाला है । ... इन स्त्रियों का उत्थान ना होने से क्या तुम लोगों की उन्नति संभव है ?

## प्रेम एवं अन्य स्वर :

स्वामी विवेकानंद ने अपनी एक कविता में प्रेम और सौंदर्य की चर्चा की है । यह एहलौकिक और पारलौकिक अनुभवों का सम्मिश्रण प्रतीत होता है : -

सुंदरता वह है जो देखी ना जा सके

प्रेम वह है जो अकेला रहे

गीत वह है जो जिये, बिना गाये

(शांति /कविता /विवेकानंद)

इससे थोड़ा हटके , नई कविता में वर्णित प्रेम और प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त होता है -

कोई रोम बचाएगा

कोई मदीना

कोई चाँदी बचाएगा कोई सोना

मैं निपट अकेला कैसे बचाऊँगा तुम्हारा प्रेम पत्र ।

(प्रेमपत्र /बद्रीनारायण)

और हठ भी है

हमें बहले हीं सिर कलम करा देना पड़े

लेकिन तुम्हारे प्यार के खिलाफ़ कोई शब्द ना सुनना पड़े ।।

(लेकिन /अष्टभुजा शुक्ल)

इस प्रकार , नई कविता में व्यक्त प्रेम एक ईंधन है जो जीवन के सरसतापूर्ण निर्वाह की ऊर्जा देती है ।

इन बातों के अतिरिक्त स्वतंत्रयोत्तर कविता में भविष्य की चिंता है जिससे एक बेहतर कल का सृजन हो सके । यह वेदान्त समेत अधिकाधिक दर्शनों का मूल तत्व है -

इसलिए

सोचता हूँ मैं लूँगा तो लूँगा आसमान

कि जिसमें सब आ जायें

और बाहर खड़ा भिंगता रहे



LBP PUBLICATION

बस मेरा अकेलापन।

(छाता /भवानी प्रसाद मिश्र)

तथा

एक मिनट रुक कर

एक वृद्ध को सड़क पार कराऊंगा

इसी एक मिनट में बची है ज़िंदगी

(समय /आलोक धन्वा)

हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू ने स्वामी विवेकानंद को श्रद्धांजलि देते हुए लिखा था - स्वामीजी ने जो लिखा या कहा है वह महत्वपूर्ण है और हम सबके लिए महत्वपूर्ण है तथा यह आने वाले युगों तक हमें प्रभावित करता रहेगा। [10] स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कविता के प्रतिमानों से गुजरते हुए एवं उनमें वर्णित समस्याओं और उपायों को पढ़ते हुए हमें इन बातों पर पुन: भरोसा हो उठता है।

## संदर्भ सूची :-


1. स्वामी विवेकानंद, समग्र साहित्य , खंड -II , रामकृष्ण मिशन नागपुर , 2012 पेपरबैक, पृष्ठ 40,
2. स्वामी विवेकानंद, समग्र साहित्य , खंड -VI , रामकृष्ण मिशन नागपुर , 2012 पेपरबैक, पृष्ठ 63
3. शुक्ल रामचन्द्र, कविता क्या है , निबंध निलय, राजकमल दिल्ली , 2009 पेपरबैक
4. शुक्ल रामचन्द्र, निबंध-साहित्य , श्रेष्ठ निबंध ,लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद, 2010 पेपर बैक
5. तिवारी विश्वनाथ प्रसाद , आधुनिक हिन्दी कविता संचयन , साहित्य अकादमी , 2012 पेपरबैक
6. स्वामी विवेकानंद, वार्ता , समग्र साहित्य , खंड V , रामकृष्ण मिशन नागपुर , 2012 पेपरबैक, पृष्ठ 110
7. स्वामी विवेकानंद, साहित्य संचयन, रामकृष्ण मिशन नागपुर , 2014 पेपरबैक, पृष्ठ 217
8. स्वामी विवेकानंद, साहित्य संचयन, , रामकृष्ण मिशन नागपुर , 2014 पेपरबैक, पृष्ठ 237
9. स्वामी विवेकानंद, व्याख्यान: धर्म-महासभा , साहित्य संचयन, प्रस्तावना, रामकृष्ण मिशन नागपुर , 2014 पेपरबैक
10. वेबसाइट - www.vivekanandaquotes.org/Nehru- दिनांक 20.02.2018

डॉ. सुधीर शर्मा

**शोध निर्देशक** , विभागाध्यक्ष हिन्दी कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई (छ.ग)

सनीश चन्द्र

**शोध छात्र** , हिन्दी , कल्याण कॉलेज भिलाई / पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर .